



भारतीय कृषि में ग्रामीण युवाओं की बदलती भूमिका

* आशी सर्वा

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: sarva.aashi@gmail.com

भारतीय कृषि में ग्रामीण युवाओं की भूमिका तेजी से बदल रही है। पहले युवा मुख्य रूप से परिवार की खेती में श्रम और पारंपरिक ज्ञान के आधार पर काम करते थे। अब शिक्षा, मोबाइल इंटरनेट, आधुनिक कृषि तकनीक और उद्यमिता के कारण युवा उत्पादन के साथ-साथ प्रबंधन, विपणन और कृषि व्यवसाय में भी सक्रिय हो रहे हैं। युवा पीढ़ी कृषि को केवल पारंपरिक पेशा नहीं बल्कि आधुनिक उद्यम के रूप में देखने की क्षमता रखती है।

तकनीक अपनाने में युवाओं की भूमिका

युवा मोबाइल फोन, इंटरनेट, डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन जानकारी का उपयोग आसानी से सीख सकते हैं। वे मौसम की जानकारी, बाजार भाव और तकनीकी सलाह परिवार के अन्य सदस्यों तक पहुँचाने में मदद कर सकते हैं। ड्रोन, सेंसर, आधुनिक मशीन और डिजिटल रिकॉर्ड जैसी तकनीकों को अपनाने में युवा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कृषि उद्यमिता

ग्रामीण युवा खेती के अलावा नर्सरी, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, डेयरी, बकरी पालन, मत्स्य पालन, खाद्य प्रसंस्करण और कृषि मशीन सेवा जैसे उद्यम शुरू कर सकते हैं। ऐसे व्यवसाय स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हैं और कृषि के आसपास रोजगार की नई संभावनाएँ बनाते हैं। उद्यम शुरू करने से पहले बाजार, लागत और जोखिम का अध्ययन आवश्यक है।

डिजिटल बाजार और ब्रांडिंग

आज युवा सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यमों का उपयोग उत्पादों की जानकारी ग्राहकों तक पहुँचाने के लिए कर सकते हैं। स्थानीय फल, सब्जियाँ, मसाले, प्रसंस्कृत खाद्य और अन्य कृषि उत्पादों की ब्रांडिंग की जा सकती है। सीधे ग्राहक तक पहुँचने से किसान को बाजार की प्रतिक्रिया समझने का अवसर मिलता है। हालांकि गुणवत्ता, पैकेजिंग और भरोसेमंद डिलीवरी की व्यवस्था भी जरूरी है।



कौशल विकास

आधुनिक कृषि में मिट्टी प्रबंधन, जल संरक्षण, मशीन संचालन, वित्तीय योजना, डिजिटल साक्षरता, विपणन और खाद्य सुरक्षा जैसे कौशल की आवश्यकता बढ़ रही है। कृषि विश्वविद्यालय, प्रशिक्षण संस्थान और स्थानीय कृषि विभाग युवाओं को व्यावहारिक प्रशिक्षण देकर इस परिवर्तन को मजबूत कर सकते हैं।

युवाओं की प्रबंधन भूमिका

युवा परिवार की खेती में रिकॉर्ड रखने, लागत निकालने, बाजार से संपर्क करने और उत्पादन की योजना बनाने में मदद कर सकते हैं। इससे खेती अधिक व्यवस्थित व्यवसाय बन सकती है। डेटा और रिकॉर्ड के आधार पर यह समझना आसान होता है कि कौन-सी फसल लाभकारी है, किस गतिविधि में लागत अधिक है और किस बाजार में बेहतर अवसर मिल सकते हैं।

सतत कृषि में योगदान

युवा जल संरक्षण, जैविक पदार्थ का उपयोग, फसल विविधीकरण, कम अपशिष्ट और पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों को बढ़ावा दे सकते हैं। जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में संसाधनों का सावधानीपूर्वक उपयोग भविष्य के लिए आवश्यक है। नई तकनीक और पारंपरिक स्थानीय ज्ञान का संयोजन टिकाऊ कृषि प्रणाली बनाने में उपयोगी हो सकता है।

चुनौतियाँ

ग्रामीण युवाओं के सामने भूमि का छोटा आकार, पूंजी की कमी, बाजार जोखिम, प्रशिक्षण की सीमित उपलब्धता और कुछ क्षेत्रों में इंटरनेट की समस्या जैसी चुनौतियाँ हो सकती हैं। कृषि में आय की अनिश्चितता भी युवाओं को अन्य रोजगार की ओर ले जा सकती है। यदि कृषि को लाभकारी, तकनीक-आधारित और सम्मानजनक करियर बनाया जाए, तो युवा अधिक सक्रिय रूप से इस क्षेत्र से जुड़ सकते हैं।

महिलाओं और सामुदायिक भागीदारी

ग्रामीण युवा महिलाएँ भी कृषि, प्रसंस्करण, पशुपालन, स्वयं सहायता समूह और डिजिटल विपणन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। सामूहिक प्रयास से प्रशिक्षण, खरीद और बिक्री की लागत को कम करने के अवसर बन सकते हैं। युवा समूह स्थानीय स्तर पर कृषि सेवाएँ और उद्यम विकसित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

भारतीय कृषि का भविष्य ग्रामीण युवाओं की भागीदारी से मजबूत हो सकता है। युवा तकनीक, शिक्षा और उद्यमिता को पारंपरिक कृषि ज्ञान से जोड़कर खेती को अधिक संगठित और बाजार-केंद्रित बना सकते हैं। उन्हें प्रशिक्षण, वित्त, तकनीक, बाजार और मार्गदर्शन की उचित पहुँच मिले तो ग्रामीण युवा केवल खेत पर काम करने वाले व्यक्ति नहीं, बल्कि आधुनिक कृषि उद्यमी और ग्रामीण विकास के सक्रिय भागीदार बन सकते हैं।